

दीवान-ए-आम पुं. (अर.) सामान्य लोगों या जनता के लिए राजा का दरबार, राजदरबार, आम दरबार; आम दरबार, लगने के लिए सभा का स्थान या भवन।

दीवान-ए-आलम पुं. (अर.) दे. दीवान-ए-आम।

दीवान-ए-खास पुं. (अर.) राजा के यहाँ विशिष्ट लोगों की सभा।

दीवान-खाना पुं. (फा.) बैठक, घर के बाहर बैठने की जगह, दरबार लगाने का स्थान, जहाँ बड़े लोग बैठकर लोगों से मिलते या बातें करते हैं।

दीवानगी स्त्री. (फा.) दीवानापन, पागलपन, उन्मत्तता, विक्षिप्त होने की स्थिति।

दीवाना वि. (फा.) प्रेम में पागल, एक ही धुन में रहने वाला, विक्षिप्त, सनपकी उन्मत्त मुहा. दीवाना होना- किसी के प्रति अत्यधिक प्रेमासक्त होना, हर समय एक ही धुन में रहना।

दीवानी स्त्री. (फा.) 1. धन संपत्ति आदि के झगड़ों से संबंधित, व्यवहार-संबंधी 2. दीवान का पद 3. पागल या विक्षिप्त स्त्री से संबंधित।

दीवार स्त्री. (फा.) ईंट पत्थर को मिट्टी या सीमेंट से जोड़कर किसी स्थान पर उठाई कई ऊँची संरचना या भित्ति।

दीवाल स्त्री. (फा.) दे. दीवार।

दीवाला पुं. (देश.) दे. दिवाला।

दीवाली स्त्री. (तद्.) कार्तिक मास की अमावस्या तिथि को मनाया जाने वाला उत्सव, जिसमें घर के चारों ओर दीपों को जलाकर रखा जाता है और लक्ष्मी की पूजा की जाती है, दीपावली, दीपोत्सव, दीपमालिका।

दीह वि. (तद्.) दीर्घ, बड़ा लंबा, बहुत ऊँचा पुं. 1. दिन, दिवस 2. चहार दीवारी, परकोटा।

दुंद पुं. (तद्.) दे. द्वंद्व।

दुंदुभि स्त्री. (तद्.) अनुरणनात्मक नगाड़ा, बड़ा ढोल, विजय-घोषणा के लिए ताल वाद्य, प्रचार

के लिए प्रयोग किया जाने वाला वाद्य मुहा. दुंदुभि बजाना-विजय-घोषणा करना, प्रचार करना।

दुंदुमा स्त्री. (तद्.) नगाड़े की आवाज, दुंदुभी या धोंसा बजाने की तड़तड़ाहट।

दुंबा पुं. (फा.) मेढ़े या भेड़ की एक किस्म, जिसकी पूँछ चक्की के पाट जैसी गोल और भारी होती है।

दुःख पुं. (तत्.) कष्ट, क्लेश, व्यथा, तकलीफ अनिष्ट, पीड़ा, विपत्ति, संकट, कष्ट मुहा. दुःख उठाना-दुःख झेलना 2. दुःख देना-दुःखी करना 3. दुःख पहुँचाना-कष्ट देना 4. दुःख बँटाना- संकट में दुःखी व्यक्ति का साथ देना, सहानुभूति दिखाना 5. दुःख बाँटना-दुःख की बात औरों को बताना।

दुःखकर वि. (तत्.) दुःख देने वाला, दुःखदायी, दुःखकारी, क्लेश देने वाला, कष्ट पहुँचाने वाला।

दुःखकारी वि. (तत्.) दे. दुःखकर।

दुःखित वि. (तत्.) दुर्दशा की स्थिति में रहने वाला, बुरी हालत में स्थित।

दुःखत्रय पुं. (तत्.) दर्शन. तीन प्रकार के दुःखों का समाहार, आध्यात्मिक आधिभौतिक और आधिदैविक दुःख, आध्यात्मिक दुःख के अंतर्गत क्रोध, लोभ, मोह, चिंता आदि मानसिक दुःख आते हैं, आधिभौतिक दुःख के अंतर्गत पशु पक्षी, साँप, मच्छर कीट, आदि के द्वारा पहुँचाई गई हानियाँ आती हैं, आधिदैविक दुःख के अंतर्गत प्राकृतिक शक्तियों और देवताओं द्वारा पहुँचाए गए आँधी, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, वज्रपात, शीत, ताप आदि दुःख आते हैं।

दुःखद वि. (तत्.) कष्टप्रद, दुःखदायी, दुःख पहुँचाने वाला विलो. सुखद।

दुःखदाघ पुं. (तत्.) दुःख का ताप, दुःखाग्नि, असह्य दुःख।

दुःखदाता वि. (तत्.) दुःख या कष्ट देने वाला दुःखदायी पुं. दुःख देने वाला व्यक्ति।